तबला वादन एवं कथक नृत्य की रचनाओं में अंतः सम्बन्ध : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा से (संगीत) में पी0 एच0 डी0 की उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध की प्रस्तावित रूपरेखा

शोधनिर्देशिका

प्रो0 नीलू शर्मा

संगीत विभाग, कला संकाय

शोधकर्त्री

रूबी वर्मा

संगीत विभाग, कला संकाय

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा–282005

2020

भूमिका

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में 'तबला' सर्वाधिक प्रचलित लोकप्रिय तालवाद्य है। उत्तर मध्यकाल में प्रचार में आया 'तबला' वर्तमान में अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह वाद्य भारतीय संगीत का सर्वप्रमुख तालवाद्य है। तबला वाद्य आज राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय ताल वाद्यों में सर्वाधिक ख्याति अर्जित कर रहा है। वर्तमान में तबला शास्त्रीय संगीत व उपशास्त्रीय संगीत के साथ–साथ सुगम संगीत, चित्रपट संगीत, लोक संगीत, फिल्म संगीत इत्यादि सभी विधाओं की संगति हेतु अनिवार्य वाद्य बन चुका है। साथ ही अन्य ताल वाद्यों की अपेक्षा तबले का स्वतन्त्र वादन भी बहुप्रचारित है। स्वतन्त्र वादन के प्रयोग हेतु तबले का साहित्य पक्ष विश्व के ताल वाद्य साहित्यों में विशाल व समृद्ध है। तबला वादन के साहित्य को विस्तारशील एवं सुदृढ़ बनाने हेतु विविध तबला वादकों ने अपनी कल्पना व सृजनशीलता के आधार पर तबला वाद्य की वादन शैली को विकसित किया जो कि 6 घराने के रूप में विकसित हुआ। यह घराने प्रायः दिल्ली, अजराड़ा, लखनऊ, बनारस, फर्रूखाबाद व पंजाब घराने के नाम से जाने जाते हैं। विविध घरानों के माध्यम से अनेकानेक रचनाएं प्रचलन में आयीं। तबला वादन में दो प्रकार की रचनाओं का प्रयोग किया जाता है–

विस्तारशील रचना **अविस्तारशील रचना**

विस्तारशील रचनाओं के अन्तर्गत कायदा, पेशकार व रेला तथा अविस्तारशील रचना के अन्तर्गत उठान, टुकड़े, चक्रदार टुकड़े, फरमाइशी टुकड़े, परन, गत, तिहाईयाँ इत्यादि अनेक रचनाओं का भण्डार भरा है जिसका जितना गहन अध्ययन किया जाये वह उतना ही व्यापक व सौन्दर्यात्मक रूप लेकर हमारे समक्ष प्रस्तुत होता है। तबला वादन के साथ कथक नृत्य का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। यह दोनों ही विधायें उत्तर भारत में पल्लवित व पुष्पित होती रहीं हैं।

भारत के प्राचीन परम्परागत शास्त्रीय नृत्यों की श्रृंखला में सर्वाधिक प्रचलित नृत्य विधा कथक है, जो कि उत्तर भारत की नृत्य विधाओं में अपना महत्वपूर्ण व प्रमुख स्थान रखता है।

जब विद्वानों ने इसके प्राचीन प्रमाणों की खोज की तो अनेक नाम प्रकाश में आये यथा कथिक, कथक, कथिकों। कथक शब्द संस्कृत के कथ् धातु से निर्मित है। **'कथयति यः सः कथकः'** अर्थात् जो कथन करता है वह कथक है। कथक नृत्य के विविध घरानों के माध्यम से इसका पारम्परिक स्वरूप प्रचलन में है। यह घराने लखनऊ, जयपुर व बनारस के नाम से विख्यात है। इन घरानों से सम्बन्धित कलाकारों ने अनेकानेक रचनाओं का निर्माण किया। इन रचनाओं को आधार मानकर कथक नृत्य को दो पक्षों 'नृत्त पक्ष' व 'नृत्य पक्ष' में विभाजित किया गया। नृत्त पक्ष के अन्तर्गत थाट, आमद, परन–आमद, तोड़े–टुकड़े, परन, गत निकास, गत भाव, परमेलु, कवित्त, गणेश परन, लड़ी, बाँट, चलन या चाला, उपज आदि सम्मिलितहै तथा नृत्य पक्ष के अन्तर्गत वन्दना, कवित्त, गत निकास व गत भाव आदि का प्रस्तुतिकरण किया जाता है। रचनाओं के यह विविध प्रकार चाहे कथक नृत्य से परस्पर सम्बन्ध रखती है किन्तु इनमें तबले की रचनाओं की भी नाम साम्यता प्राप्त होती है।

'तबले की भाँति ही कथक नृत्य में विस्तारशील व अविस्तारशील रचनाओं का प्रचलन है।' टुकड़ा, परन, गत, तिहाईयाँ इत्यादि अनेक रचनायें एवं पढ़न्त की क्रिया जो दोनों ही विधाओं में दृष्टिगोचर होती है जिस प्रकार तबला वादन में जो स्थान ठेके का है वही स्थान कथक नृत्य में तत्कार ने लिया।जहाँ तबले में कायदे के पल्टे कर उसका विस्तार किया जाता है वहीं कथक नृत्य में ततकार के पल्टे कर उनका विस्तार किया जाता है। तबले की उठान व कथक की आमद रचना भी एक समान परिलक्षित होती है।

अतः कथक नृत्य की संगति में तबला वादन का प्रयोग मुख्य धुरी रूप में किया जाता है। सम्पूर्ण कथक नृत्य की प्रस्तुति तबला वाद्य पर ही आधारित है। इसीलिए कथक नृत्य की रचनाओं में कहीं न कहीं तबले की रचनाओं से अन्तः सम्बन्ध दिखाई पड़ जाता है।

समस्या का आर्विभाव :–तबला वादन व कथक नृत्य में यदि हम दृष्टि डालें तो नाम में साम्यता प्राप्त होती हैसाथ ही कुछ रचनाओं के विस्तार में भी तबला वादन व कथक नृत्य की

समानता दिखाई देती है। इसी कारण शोधकर्त्री के मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि इन रचनाओं की जाँच प्राप्त की जाए व इनका विश्लेषण कर रचनाओं के मध्य के अन्तः सम्बन्धों की जानकारी प्राप्त की जाए कि यह रचनायें किस प्रकार समान है। इस जिज्ञासा के कारण ही समस्या का प्रादुर्भाव हुआ तथा शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत विषय को चयन करने की इच्छा जाग्रत हुई।

तत्पश्चात् शोधछात्रा द्वारा सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया गया जो इस प्रकार है–

क्र0सं0	शोध प्रबन्ध	शोधार्थी
1.	तबले की विस्तारशील बन्दिशों का विश्लेषणात्मक अध्ययन : पेशकार, कायदा और रेला के विशेष सन्दर्भ में	जमुना प्रसाद पटेल–2009
2.	वाद्य संगीत में रस की परिकल्पना	पन्नालाल चौरसिया–2009
3.	संगीत में ताल वाद्यों की उपयोगिता– भारतीय संगीत के सन्दर्भ में ताल वाद्यों की उत्पत्ति, विकास और उपयोगिता का विवेचनात्मक अध्ययन	चित्रा गुप्ता – 1992
4.	तबले के बनारस घराने की रचनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ0 शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी 2009
5.	कथक नृत्य के साथ तबला संगति	नागेश्वर लाल कर्ण 1996
6.	कथक नृत्य और तबला संगति	डॉ0 अंकित पारिक
7.	कथक नृत्य में गायन, वादन व लय का स्थान	नीता पाण्डेय 2002
8.	अवनद्ध वाद्यों के शास्त्रीय सिद्धान्त एवं उनकी वादन परम्परा का विश्लेषणात्मक अध्ययन	महेन्द्र प्रसाद शर्मा 2004

क्र0सं0	शोध पत्र	शोधार्थी
1.	तबला वादन में निहित सौन्दर्य	पं0 सुधीर माईणकर मार्च 2009
2.	भारतीय संगीत में तबले का स्थान	प्रो0 गजानन ताड़े जनवरी 1974
3.	तबला वादन में प्रयुक्त मुखड़े का समीक्षात्मक विवेचन	डॉ0 कुमार ऋषितोष जून 2006

4.	परम्परागत कथक नृत्य और तबले की बन्दिशों में अंतः सम्बन्ध	अपर्णा चार्चोदिया
5.	कथक नृत्य में तबला संगति एवं अन्तर्सम्बन्ध	स्वाति यादव
6.	कथक नृत्य एवं तबला संगति में नवीन प्रयोगों द्वारा रसानुभूति	तृप्ती गुप्ता
7.	परम्परागत कथक नृत्य और तबले की बन्दिशों में अंतः सम्बन्ध	हेमन्त शिन्दे
8.	तबला एवं कथक नृत्यों के अन्तर्सम्बन्धों का विकास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (तबला एवं कथक नृत्य की रचनाओं के विशेष सन्दर्भ में)	द्विजेश उपाध्याय, डॉ0 मुकेश चन्द्र पन्त अप्रैल 2017
9.	नृत्य शिक्षा : परम्परा, परिवर्तन और विकास	प्रियंका मजूमदार दिसम्बर 2016
10.	बनारस घराने की प्रमुख रचना : उठान	रजनी अक्टूबर 2017
क्र0सं0	पुस्तकें	लेखक का नाम
1.	तबला ग्रन्थ	पं0 छोटे लाल मिश्र
2.	तबले के घराने, वादन शैलियाँ एवं बन्दिशें	डॉ0 सुदर्शन राम
3.	तबला विशारद	डॉ0 शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी
4.	पखावज और तबला के घराने एवं परम्पराएं	डॉ0 आबान ई0 मिस्त्री
5.	पखावज एवं तबला की शिक्षण पद्धति	डॉ0 विपुल पाण्डे
6.	कथक नृत्य के साथ तबला संगति	डॉ0 नागेश्वर लाल करन
7.	कथक नृत्य और तबला संगति	डॉ0 अंकित पारिक
8.	अवनद्ध वाद्य सिद्धान्त एवं वादन परम्परा	डॉ0 महेन्द्र प्रसाद शर्मा
9.	तबले का उद्गम, विकास और वादन शैलियाँ	डॉ0 योगमाया शुक्ल

उपरोक्त सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से ज्ञात होता है कि तबला वाद्य एवं कथक नृत्य सम्बन्धी सामग्री तो प्रचुर मात्रा में प्राप्त होती है किन्तु तबला वादन एवं कथक नृत्य की

रचनाओं के अंतःसम्बन्ध के सन्दर्भ में लिखित सामग्री का अभाव है, व जो सामग्री उपलब्ध है वह इतनी सक्षम नहीं कि इनकी रचनाओं के अंतःसम्बन्ध के क्षेत्र में अन्य छात्र लाभान्वित हो सकें।

इसी रिक्तता को पूर्ण करने हेतु प्रस्तावित शोध प्रबन्ध को 'तबला एवं कथक' इन दोनों पक्षों में प्रयुक्त रचनाओं में सामंजस्य स्थापित कर उनके अंतः सम्बन्धों को समझने, निरीक्षण करने व उनका विश्लेषण करने हेतु ही चयनित किया गया है।

विषय कथन :–

तबला वादन एवं कथक नृत्य की रचनाओं में अंतः सम्बन्ध – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।

समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या :–

तबला (पु0)

लोकभारती प्रमाणिक हिन्दी शब्दकोश के अनुसार –ताल देने का एक प्रसिद्ध बाजा (इसमें दो बाजे एक साथ बजते हैं जिसमें एक तबला और दूसरा बाँया कहलाता है।)

वादन (पु0)

Oxford living dictionaries के अनुसार –कहना, बाजा बजाना

कथकनृत्य (पु0)

www.hindi2dictionary.com–उत्तर भारत का एक प्रकार का शास्त्रीय नृत्य।

रचना(स्त्री0) (सकर्मक क्रिया)

Google.com–तैयार करना, बनाना, स्वरूप स्थिर करना, प्रस्तुत करना, उत्पन्न कराना, सजाना, संवारना, उचित क्रम में लगाना।

www.hindi2dictionary.com–एक ऐसी क्रिया जिसमें हम अपनी मानसिक स्मृतियों तथा भावों को भौतिक रूप देकर अस्तित्व में लाते हैं रचना कहलाती है।

विश्लेषण (पु0)

Google.com–अलग करना, छानबीन करना, जाँच करना।

वृहत सामान्तर कोश के अनुसार –विच्छेदन, विलग्नन।

प्रस्तावित शोध का महत्व– प्रस्तुत शोध कार्य तबला वादन एवं कथक नृत्य की रचनाओं में अंतः सम्बन्धों के विश्लेषण पर आधारित होगा। किसी भी शोध ग्रन्थों, शोध प्रबन्धों एवं पुस्तकों के प्रकाशन का इस क्षेत्र में अभाव है। प्रस्तुत शोध कार्य संगीत के एक नवीन क्षेत्र को प्रतिपादित करने में सहायक सिद्ध होगा। यह शोध कार्य संगीत प्रेमी, विद्यार्थीगण, शिक्षण संस्थाओं, शोधकर्ताओं के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। प्रस्तावित शोध कार्य द्वारा तबला वादन एवं कथक नृत्य की रचनाओं, दोनों ही क्षेत्र में शोध के नवीन आयाम भी प्रशस्त होंगे।

अध्ययन के उद्देश्य :–

- तबला वाद्य का परिचयात्मक अध्ययन करना।
- भारतीय शास्त्रीय नृत्यों में कथक नृत्य का अध्ययन करना।
- तबला वादन में प्रयुक्त विविध रचनाओं एवं उनके प्रकारों का अध्ययन करना।
- कथक नृत्य में प्रयुक्त विविध रचनाओं एवं उनके प्रकारों का अध्ययन करना।
- तबला वादन एवं कथक नृत्य की रचनाओं में अंतः सम्बन्ध एवं उनका विश्लेषण करना।
- शोधकर्त्री द्वारा स्वनिर्मित तबले एवं कथक नृत्य की कतिपय रचनाओं एवं उनमें निहित विशेषताओं का अध्ययन करना।

परिसीमांकन :–प्रस्तुतशोध प्रबन्ध कार्य समय व सीमा को ध्यान में रखते हुए तबला वादन एवं कथक नृत्य की रचनाओं में अंतः सम्बन्धों के विश्लेषणात्मक अध्ययन तक ही सीमित रहेगा।

अध्ययन की विधि:–प्रस्तुत शोध प्रबन्ध हेतु शोध छात्रा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा तथा साक्षात्कार विधि द्वारा विभिन्न विद्वानों एवं कलाकारों की सहायता से कार्य पूर्ण किया जाएगा। शोध प्रबन्ध में वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग कर विषय में आए तथ्यों को और अधिक सत्यापित किया जाएगा।

अध्ययन के उपकरण :–

दृश्य–श्रव्य सामग्री (कम्पयूटर, इंटरनेट, टेपरिकॉर्डर, लेपटॉप और मोबाइल)

अध्ययन के स्त्रोत :–

पुस्तकालय, पुस्तकें, ग्रन्थ, पत्र–पत्रिकाओं तथा कलाकारों से साक्षात्कार, अन्तरजाल इत्यादि के द्वारा पूर्ण किया जायेगा।

अध्यायों का विभाजन :–

भूमिका

प्रथम अध्याय–तबला : एक परिचयात्मक अध्ययन।

द्वितीय अध्याय–भारतीय शास्त्रीय नृत्यों में कथक नृत्य।

तृतीय अध्याय–तबला वादन में प्रयुक्त विविध रचनायें एवं उनके प्रकार।

चतुर्थ अध्याय–कथक नृत्य में प्रयुक्त विविध रचनायें एवं उनके प्रकार।

पंचम अध्याय–तबला वादन एवं कथक नृत्य की रचनाओं में अन्तः सम्बन्ध एवं उनका विश्लेषणात्मक अध्ययन।

छठवां अध्याय–स्वनिर्मित तबले एवं कथक नृत्य की कतिपय रचनायें एवं उनमें निहित विशेषतायें।

उपसंहार

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

पुस्तकें

क्र0सं0	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशक
1.	मिस्त्री डॉ0 आबान ई0	पखावज और तबला के घराने एवं परम्परायें	पं0 के की0 एस0 जिजिना स्वर साधना समिति मुम्बई, द्वितीय संस्करण 2000
2.	रघुवीर डॉ0 गीता	कथक नृत्य शास्त्र	
3.	सिंह डॉ0 मोनिका	कथक और अभिनय	
4.	खरे शिखा	कथक सौन्दर्यात्मक शास्त्रीय नृत्य – गहन अध्ययन एवं चिन्तन	

5.	दाधीच डॉ0 पुरू	कथक नृत्य शिक्षा भाग–2	बिन्दु प्रकाशन, उज्जैन
6.	कर्ण डॉ0 नागेश्वर लाल	कथक नृत्य के साथ तबला संगति	कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली
7.	पारिक डॉ0 अंकित	कथक नृत्य और तबला संगति	अभिषेक पब्लिकेशन्स, चण्डीगढ़
8.	उपाध्याय द्विजेश	तबला एवं कथक नृत्य के अर्न्तसम्बन्धों का विकास (तबला एवं कथक नृत्य की रचनाओं के विशेष सन्दर्भ में)	International Journal oh Research - Granthaalayah
9.	वर्मा मिश्री	कथक नृत्य में सृजनात्मकता	मासिक पत्रिका अगस्त 2008